पतिव्रत की महिमा
पत्नीव्रत की गरिमा

—श्रीराम शर्मा आचार्य

पतिव्रत की महिमा
पत्नीव्रत की गरिमा

लेखक

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. : ०९९२७०८६२८९, ०९९२७०८६२८७

फैक्स : २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१४ मूल्य :७.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशक
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि
मथुरा (उ० प्र०)

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

पुनरावृत्ति सन् २०१४

मुद्रक
युग निर्माण योजना प्रेस
गायत्री तपोभूमि, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पतिव्रत की महिमा–पत्नीव्रत की गरिमा

पतिव्रत एक योग साधना

पुरुषों की अपेक्षा गृहिणी नारी के पास अवकाश की कमी रहती है। रोजगार संबंधी काम कर चुकने के बाद पुरुष वर्ग के पास काफी समय बच जाता है, जिसमें वह आत्म-कल्याण का कोई कार्यक्रम आसानी से चला सकता है। नारी के पास समय की कमी रहती है। प्रातः उठते ही वह गृहस्थी के काम-धंधों में लग जाती है। जिस समय पुरुष वर्ग अपने काम पर गया होता है, नारी घर के किसी न किसी काम में लगी रहती है। वह काम घर की सफाई व्यवस्था से लेकर कपड़े सीना, राशन, मसाले तथा अन्य चीजों का रखना, उठाना, सुखाना, बनाना, बीनना न जाने कितने तरह के काम उनके पीछे लगे रहते हैं। इन सबके ऊपर संतान पालन, उसकी देख-रेख तथा साज-सँभाल का इतना बड़ा काम उसके पास रहता है कि उससे किसी समय अवकाश नहीं मिलता। बच्चे हर समय माँ से लिपटते रहते हैं। यही कारण है कि उसे आत्म-कल्याण की कोई योजना चलाने के लिए अवकाश वांछित तथा आवश्यक है।

अतएव नारी की इस व्यस्तता को देखते हुए भारतीय मनीषियों ने नारी के लिए आत्म-कल्याण का एक सरल सा उपाय खोज दिया है। वह है पतिव्रत धर्म का निर्वाह। पतिव्रता नारी वह सद्गति सहज ही में प्राप्त कर लेती है जो योगी-यती, ज्ञानी-ध्यानी बड़ी कठिनाई से साधना करने के बाद पाते हैं। पतिव्रत धर्म नारियों के लिए बड़ा सरल तथा हितकारी धर्म है। इसके द्वारा वह बिना किसी तप के ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन का चरम लक्ष्य प्राप्त कर सकती है। इसमें न कोई कठिनाई होती है और न बाधा।

मोटी दृष्टि से पतिव्रत धर्म का यह आशय लिया जाता है कि स्त्री परपुरुषगामिनी न हो। पतिव्रत धर्म के नियमों में यह एक साधारण नियम है, केवल इसी नियम के निर्वाह को ही पतिव्रत नहीं कहते। परपुरुष गमन अथवा परनारी गमन दोनों ही पाप माने गए हैं।

पतिव्रत धर्म का अर्थ है–पत्नी द्वारा पति के अस्तित्व में संपूर्ण आत्म-समर्पण। यह एक प्रकार की योग साधना है। इस प्रकार द्वेष की भावना मिट जाती है और पत्नी पति के साथ एक रूप हो जाती है। भगवान को भक्त जब आत्म-समर्पण करते हैं तो उसका अहंभाव तथा स्वतंत्र इच्छाएँ आप से आप समाप्त हो जाती हैं और साधक को वह उच्चस्तरीय मनोभूमि प्राप्त हो जाती है, जिसमें साधना जीवन की सारी कठिनाइयाँ दूर हो जाती हैं। तृष्णा, अहंकार, लोभ, मोह, मान, मत्सर आदि के सारे कंटक दूर हो जाते हैं। जीवन की गति उत्तरोत्तर उन्नत दिशा की ओर निरंतर गति से बढ़ती चली जाती है।

इस प्रकार जब पत्नी पति के अस्तित्व में अपने अस्तित्व को विलीन कर देती है, तब उसके दांपत्य जीवन में कोई भी ऐसी बात नहीं रह जाती जो अशांति का कारण बने। अशांति से छुटकारा पा जाना आत्म-कल्याण का एक लक्षण है। पतिव्रत धर्म में निष्ठा रखने वाली नारी योगियों की तरह जीवन मुक्त हो जाती है। वह पति में भगवत् भक्ति का पुण्य तथा आनंद पाती है। जीवन पथ का कोई अभाव, कोई कंटक उसे कष्ट नहीं दे पाता। वह सदा-सर्वदा और सारी स्थिति में संपन्न तथा संतुष्ट रहती है। उसका शरीराभिमान छूट जाता है। जीवन और मृत्यु दोनों स्थितियों में एक जैसा स्थैर्य रहता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भारतीय इतिहास में पतिव्रताओं की इस जीवन मुक्ति तथा दृढ़ता के उदाहरण भरे पड़े हैं।

अंधे पति से अपनी स्थिति अच्छी रहने देने की अनिच्छुक गांधारी ने आँखों में आजीवन पट्टी बाँधे रहने का व्रत लिया और उसे सदैव निभाया। शैव्या ने हरिश्चंद्र के साथ, दमयंती ने नल के साथ, सीता ने राम के साथ कठिन समय आने पर अपने त्याग तथा प्रेम का अद्‌भुत परिचय दिया। सावित्री ने सत्यवान के साथ, सुकन्या ने वृद्ध च्यवन ऋषि के साथ कितना उत्कृष्ट संबंध निभाया! अरुंधती, अनुसूया, बेहुला, शकुंतला, भारती आदि कितनी ही नारियों के ऐसे दिव्य चरित्र मिलते हैं, जिनसे यह प्रतीत होता है कि पति-परायणता इस देश की नारी समाज का आदर्श रहा है। जिसका निर्वाह उन्होंने सदा ही संपूर्ण तन, मन और आत्मा से किया।

अपने आराध्य के प्रति आत्मोत्सर्ग कर देने में एक अनिवार्य आनंद होता है। संपूर्ण आत्म-समर्पण किए हुए नारी का शरीराभिमान यहाँ तक नष्ट हो जाता है कि वह केवल आत्म रूप हो जाती है। कोई भी शारीरिक कष्ट अथवा सुख उसे विचलित नहीं कर पाता।

भगवान की उपासना उसका कोई स्वरूप मानकर भी की जा सकती है। वृक्षों में पीपल, पौधों में तुलसी, नदियों में गंगा और पत्थरों में शालिग्राम को भगवान का प्रतीक माना गया है। भक्त लोग इनके माध्यम से भी भगवान की आराधना करते और उसका फल पाते हैं। मंदिरों में स्थापित भगवान की प्रतिमा पत्थर अथवा धातु की होती है। किंतु जब उसे श्रद्धा और विश्वास का आरोपण कर उन्हें भगवान मानकर पूजा जाता है, तो भावना के अनुसार वे प्रतिमाएँ भी साधक के लिए भगवान रूप हो जाती हैं। भावना की प्रतिध्वनि ही उन आराध्य प्रतिमाओं से टकराकर वापस आती और भक्त को उसी फल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का अधिकारी बना देती है जो साक्षात भगवान की भक्ति करने पर प्रत्यक्ष अनुग्रह द्वारा प्राप्त होता है। पतिव्रत धर्म में भी पति को भगवान मानकर पूजा करने का निर्देश किया गया है। जब पत्थरों, पौधों, पेड़ों तथा नदियों में भगवान की भावना स्थिर की जा सकती है और उसके अनुसार पुण्य पाया जा सकता है, तब परमात्मा के विशुद्ध अंश जीवित मनुष्य, जो कि अपना प्रिय तथा सहायक भी है, के प्रति भगवान की भावना बना लेने में क्या कठिनाई हो सकती है? निश्चय ही यदि हृदय में पति के प्रति निश्चल भावना है, तो उसे भगवान रूप में माना जा सकता है। पति के प्रति इस आत्म-समर्पण की भावना का उद्देश्य और कुछ नहीं, परमात्मा की प्राप्ति का एक उपाय और आत्म-कल्याण की एक सुंदर विधि है जिससे लोक-परलोक दोनों में सद्गति होती है।

पतिव्रत धर्म का निर्वाह करने से आत्म-कल्याण तो निश्चित ही है। उससे लौकिक लाभ तो प्रत्यक्ष ही होता है। दांपत्य जीवन की सबसे बड़ी सफलता है-शांति तथा परस्पर प्रेमभाव। संघर्ष की स्थिति तभी आती है, जब उनमें भिन्नता का भाव होता है; पति-पत्नी की राह, उनके स्वार्थ अथवा उनकी कामनाएँ, रुचियाँ अथवा भावनाएँ एक दूसरे से अलग होती हैं। यदि वे दोनों तन-मन से एक रूप और एक भाव हो जाएँ, तो सिवाय परस्पर प्रेम तथा त्याग के उनका सुख और किसी पर निर्भर ही न रहे। पति-पत्नी में से किसी का भी दूसरे के प्रति संपूर्ण आत्म-समर्पण दोनों को एक रूप बना देता है। पति, पत्नी में मिल जाए अथवा पत्नी, पति के मन और आत्मा में पूरी तरह समाहित हो जाए, तब उनमें भिन्नता रहती ही नहीं। पतिव्रत का विशेष लक्षण है उसका स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रहता। उसको न कोई स्वतंत्र इच्छा रहती है और न भावना। पति की इच्छा, पति की भावना और पति का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्वास ही उसका अपना हो जाता है। पति का हर्ष उसका अपना हर्ष और उसका दु:ख उसका अपना दु:ख बन जाता है। इस प्रकार की एकरूपता में संघर्ष का कोई प्रश्न ही नहीं रह जाता है। पति एक बार दुराचारी और दुष्ट ही क्यों न हो तब भी पतिव्रता का उसके प्रति न तो प्रेम कम होता है और न विश्वास। उस आत्मभाव का इतना प्रभाव होता है कि एक बार अनुभूत कर लेने पर ही पति को सुधरते देर नहीं लगती। पत्नी यदि अपने व्रत पर थोड़ा भी दृढ़ रहे और बार-बार इस बात का प्रमाण देती रहे कि उसका पति कैसा भी क्यों न हो, वह तो उसके लिए साक्षात भगवान स्वरूप है तो पति की चित्तवृत्तियाँ अवश्य बदल जाएँगी। उसे अपने आचरण पर ग्लानि और पत्नी के प्रति अभूतपूर्व सहानुभूति का उदय होगा।

समाज में ऐसे बहुत से उदाहरण पाए जाते हैं कि आस्थावान पत्नियों की सेवा तथा प्रेम की भावना ने वेश्यागामी तथा शराबी पतियों को बदलकर अपना प्रेमानुवर्ती बना लिया। स्वामी श्रद्धानंद तो इसके जीते-जागते प्रमाण हैं। सावित्री ने तो अपनी इसी प्रेम भावना के बल पर मृत पति को जीवित कर लिया था। पति को सुधारने अथवा ठीक रास्ते पर लाने के लिए जो नारियाँ कलह तथा संघर्ष के उपाय काम में लाती हैं, वे गलती करती हैं। समय-समय पर आवश्यकतानुसार नाराजगी भी दिखाई जा सकती है, अपनत्व भरी झिड़क भी बुरी नहीं है, किंतु इसका अमोघ उपाय है आत्म-समर्पण की भावना ही। सहनशील बनकर पत्नी पति को मनोवांछित मार्ग पर ला सकती है, जबकि कलह और क्लेश से अशांति ही बढ़ती है। पतिव्रत धर्म का पालन करने से पारिवारिक शांति और दांपत्य प्रेम की सुरक्षा कुछ कम लौकिक लाभ नहीं है।

भारतीय नारी ने सदैव ही पतिव्रत धर्म के इस प्रभाव में आस्था रखी और उसके अनुसार व्यवहार किया और लौकिक सुख के साथ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्म-कल्याण की दिशा में प्रगति की है। पति की दुर्बलताओं तथा त्रुटियों की ओर उसने कभी दृष्टिपात ही नहीं किया। वह सदैव अपनी ओर से अपने पुनीत कर्तव्य का ही पालन करती आई है और इसीलिए उसे हिंदू समाज में गृहलक्ष्मी और कुलवती का पद मिलता आया है। देवी की तरह उसकी मान्यता होती रही है। उसने पति को संपूर्ण आत्म-समर्पण से संतुष्ट कर उसके प्रेम तथा हृदय को जीता है। पारिवारिक जीवन में उसने पति के प्रति भक्त की भूमिका ही प्रस्तुत की है। पति के दोष दर्शन को साधना में बाधक मानकर उसने सदैव उसके प्रति उच्च भावना ही रखी। जब साधक अपने आराध्य के दोष, दुर्गुण एवं दुर्बलताओं की उपेक्षा करता हुआ अपने कर्त्तव्य एवं सद्भाव में रत्ती भर भी कमी न आने देता है। निश्चय ही वह इष्ट को अपने अनुकूल बना लेता है। पुण्यवती पतिव्रता भी इसी तथ्य पर चलकर पति की सिद्धि कर लेती है। पति को अपना सर्वस्व मानकर उसके दोषों की ओर ध्यान न देकर प्रसन्नतापूर्वक उसकी सेवा करती हुई, ठीक उसी प्रकार जीवन मुक्त हो जाती है, जिस प्रकार कोई योगी भगवान को आत्म-समर्पण कर संसार-सागर से तर जाता है। नारी के लिए आत्म-कल्याण प्राप्त करने का पतिव्रत धर्म से बढ़कर कोई धर्म नहीं। इसमें दांपत्य सुख के साथ मुक्ति अथवा मोक्ष की संभावना निहित रहती है।

शक्ति का स्त्रोत–पतिव्रत

दशरथ और मयासुर का युद्ध हो रहा था। मायावी राक्षस से सभी राजा परास्त हो चुके थे। दशरथ को भी अपनी विजय में संदेह ही दिखाई दे रहा था। तब एक नारी संग्राम में उतरी। दशरथ की अर्द्धांगिनी केकयसुता ने सारथि का पद सँभाला। उस दिन दशरथ ने घोर संग्राम कर असुरों के छक्के छुड़ा दिए। इसी बीच रथ के एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहिये की धुरी टूट गई। रथ ने हिलने-डुलने से जवाब दे दिया। उस समय कैकेयी ने अपनी उँगली पहिये में लगा दी और तब तक उस स्थिति में बनी रही जब तक उस दिन का युद्ध समाप्त नहीं हो गया। वह युद्ध कहते हैं दशरथ ने जीता था, पर यदि सचाई को अभिव्यक्त होने का अवसर दिया जाए तो यह कहना पड़ेगा कि दशरथ की विजय पतिव्रत की विजय थी।

सुलोचना ने जीवन भर पतिव्रत की कठोर साधना द्वारा मेघनाद को वह बल प्रदान किया था कि उसके आगे देवता भी नहीं टिक सकते थे। ऐसे अपराजेय योद्धा को मारने वाले महारथी लक्ष्मण को यह महान सौभाग्य पतिव्रता उर्मिला ने ही प्रदान किया। उर्मिला भारतीय नारी के गौरवमय इतिहास का चंद्रमा, जिसने चौदह वर्ष तक अपने पति की अनुपस्थिति में पलक ऊपर उठाकर परपुरुष के दर्शन भी नहीं किए थे। उसने राज्य भोग, आभूषण और स्वाद युक्त भोजनों का केवल इसीलिए परित्याग कर दिया था कि उसके पति वनवासी थे। ऐसी निष्ठाएँ भारतीय समाज को वह शक्ति प्रदान करती रही हैं जिनकी यशगाथाएँ आज भी विश्व-इतिहास के अंतरिक्ष में सूर्य की भाँति देदीप्यमान हैं।

आज की परिस्थितियाँ कुछ बदल अवश्य गई हैं पर भावनाओं को कोई प्रतिबंध नहीं लगा। उतने त्याग और तप के लिए अवसर भले ही न हो पर सामान्य जीवन में पारिवारिक व्यवस्था में तो स्त्रियाँ पुरुषों को सच्चे अर्थों में सहयोग प्रदान कर ही सकती हैं।

स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों का कार्यक्षेत्र कुछ अधिक दुरूह, जटिल और कठिनाइयों से पूर्ण होता है। अकेले श्रम की ही बात होती तो संभवत: उतनी जटिलताएँ पुरुष वर्ग के सामने न होती किंतु लोक-व्यवहार, लेन-देन, गृहस्थी के लिए आपा-धापी जुटाना, कचहरी-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मुकदमे आदि करना, इनमें उसे बार-बार निराशा का सामना करना होता है। कितनी ही जगह उसे लताड़ें मिलती हैं, कई जगह अपमान होता है। कहीं थकावट, कहीं पीड़ा। दिनभर तमाम मुसीबतों, कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इतनी सारी परेशानियों का बोझ सिर पर उठाकर चलना निस्संदेह पुरुष का ही काम है। सचमुच उसे बहुत कष्ट उठाने पड़ते हैं।

दिनभर का हारा-थका आदमी अपनी पत्नी तथा बच्चों से स्नेह और आत्मीयता की आशा रखकर घर पहुँचता है। सोचता है, घर पहुँचते ही पत्नी उसका स्वागत करेगी, कुछ ममत्व प्रकट करेगी, अपने दु:ख को सुनकर कुछ प्रबोध देगी, धीरज बँधाएगी, तो कुछ सांत्वना मिलेगी। थके हुए आदमी को एक लोटा जल मिल जाता है, तो उसका सारा श्रम दूर हो जाता है। पत्नी के इतना पूछ लेने से "आज आपका मुख उदास क्यों है, कुछ कष्ट तो नहीं?" मनुष्य की सारी परेशानी दूर हो जाती है। अपना जीवनसाथी, चिर-सहचर होने का यही अर्थ तो है कि एक के दु:ख-दरद को दूसरा बँटाए, आपत्ति में कुछ धैर्य दे और उसकी पीड़ा को अपनी पीड़ा समझकर कुछ सेवा-शुश्रूषा करे।

इतना करना तो दूर रहा, यदि स्त्रियाँ अपने पुरुषों से ठीक तरह बात भी न करें, उन्हें बात-बात पर ताने, झिड़कियाँ देती रहें तो उस मनुष्य को कितनी व्यथा होगी, यह कोई बेबस, भुक्तभोगी ही समझता होगा। ऐसी दशा में क्या कभी दांपत्य जीवन सुखी रह सकता है? क्या कभी स्त्रियाँ यह कल्पना कर सकती हैं कि उन्हें पुरुष का प्यार मिलेगा? ऐसे परिवारों में कभी सौजन्य रहता होगा, यह सोचा भी नहीं जा सकता।

मानते हैं स्त्रियों के अपने भी कुछ अधिकार हैं। उन्हें भी अपनी भावनाएँ व्यक्त करने के लिए आवश्यक वस्तुएँ चाहिए। उन्हें भी काम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करना पड़ता है, उनके लिए मान-सम्मान का भी एक क्षेत्र है, किंतु अपनी परिस्थितियों को भी तो देखना, समझना है। अपनी आमदनी यदि सिर्फ इतनी है कि कठिनाई से बाल-बच्चों का पेट पालन हो सके, किंतु स्त्री अधिक अच्छे कपड़े, जेवर-जकड़ों की माँग करे तो फिर कर्ज ही तो लेना होगा। यह नहीं तो कहीं चोरी-झपटी करनी पड़ेगी। इन अशुभ कृत्यों के दंड से क्या सारे परिवार का वातावरण दु:खमय, बोझयुक्त और मलिन नहीं बनता? इस तरह की माँगें कभी भी उचित नहीं कही जा सकती। स्त्रियाँ अपने लिए उतनी ही अपेक्षा कर सकती हैं जितना संभव है। नाजायज की कल्पना करना बेजा है। इससे संपूर्ण गृहस्थी चौपट होने का भय रहता है।

चिंताओं से घिरा हुआ मनुष्य कभी ठीक तरह से सोच भी नहीं सकता। उसकी कार्यक्षमता दिन-प्रतिदिन घटती जाती है। शरीर गिर जाता है। कई व्यक्ति तो हार मानकर घर छोड़कर भाग जाते हैं, कई आत्म-हत्याएँ कर डालते हैं। कितने ही अपने शरीर को सुखा-सुखाकर अकाल मौत के घाट उतर जाते हैं। स्त्रियों को पुरुषों के मस्तिष्क में इस प्रकार की चिंताएँ पैदा करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए।

इतना तो कम क्या अनपढ़ स्त्रियाँ भी समझती हैं कि जैसी भी कुछ परिस्थिति है, जैसा भी कुछ रूप-कुरूप आदमी है, है तो अपना ही। अपनों के साथ ही यदि प्रेमपूर्ण व्यवहार न किया जाए तो गृहस्थ-जीवन में सरसता कैसे आएगी? हर व्यक्ति अपने बच्चों से अपेक्षाकृत अधिक मधुर तथा सहृदय व्यवहार की आशा रखता है। यदि वह प्यार और आत्मीयता उसे न मिले तो मनुष्य गृहस्थी के मामलों में भी पूरी लगन से दिलचस्पी न लेगा। वह परिवार सदा डाँवाडोल परिस्थिति में ही पड़ा रहेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्या हमारी बेटियों की अवस्था सती शांडिली से भी गई बीती होगी? अपने कोढ़ी पति को संपूर्ण प्यार उत्सर्ग कर देने वाली इस सती कन्या से बढ़कर विपरीत परिस्थिति आज तक शायद ही किसी नारी को मिली होगी। सहज स्नेह, स्वाभाविक निश्छलता और मधुर व्यवहार स्त्रियों के आभूषण हैं। नम्रता, विनयशीलता तथा मधुर शब्दों से वह अपने दुष्ट से भी दुष्ट पतियों के हृदय जीत सकती है। उनकी महानता पुरुष को पुरुष बनाने में है न कि उन्हें शैतान। यह उत्तरदायित्व बहुत कुछ स्त्रियों पर भी है। उन्हीं के गौरव से आज भी भारत का गौरव है। उन्हीं की शक्ति और तपश्चर्या के प्रभाव से भारतीय संस्कृति आज भी जीवित है और युगांतरों तक अमर रहेगी।

किंतु इन दिनों परिस्थिति विपरीत होती जा रही है। अशिक्षा और रूढ़िवादी अंध परंपराओं के फलस्वरूप अब स्त्रियों में भी वह कर्त्तव्य भावना घट रही है। पुरुष स्वभाव से कुछ अधिक स्वाभिमानी होते हैं। थोड़ा सा भी यदि मान-सम्मान उन्हें अपनी पत्नियों से मिलता रहे तो दांपत्य जीवन के अधिकांश कलह दूर हो सकते हैं।

दांपत्य जीवन का सच्चा सार है, पारस्परिक प्रेम, सहानुभूति और आत्मीयता। उन्हें यह दृढ़ प्रतिज्ञा लेनी चाहिए कि हम प्रत्येक स्थिति में प्रेम, सहानुभूति, त्याग, शील, आदान-प्रदान, आशा-विश्वास, सहिष्णुता आदि का परित्याग नहीं करेंगे और इसका सजगता के साथ निर्वाह करना चाहिए।

भावना की दृष्टि से स्त्रियाँ अधिक कोमल होती हैं, किंतु पुरुषों में कार्यक्षेत्र की जटिलता के कारण कठोरता कुछ अधिक होती है। अतः गृहस्थ को सुखी रखने की अधिकांश जिम्मेदारी स्त्रियों पर आती है। उन्हें अपेक्षाकृत अधिक सहिष्णु, मधुरभाषी तथा व्यवहारकुशल होना चाहिए। स्त्री को अनन्य भावना से पति में लीन हो जाने में ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुख मानना चाहिए। समर्पण नारी का बड़प्पन है। इससे उसे सम्मान भी मिलता है, प्रेम भी। सारा परिवार जो सुख से भरा-पूरा रहता है वह इस तरह के स्त्री-पुरुषों के आध्यात्मिक सम्मिलन से ही होता है।

जीवन संघर्ष में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का संपर्क अधिक होता है। पुरुषों का क्षेत्र रोजगार तथा कमाई धंधे तक ही सीमित है। किंतु स्त्रियाँ समाज का निर्माण करती हैं अत: उनके शिक्षित होने का महत्त्व अधिक है। उनके लिए कल्पनामूलक शिक्षा की उतनी आवश्यकता नहीं है। घर में तथा समाज के यथायोग्य निर्माण का काम नारी को करना पड़ता है। इसलिए उसे कर्त्तव्यमूलक शिक्षा की आवश्यकता होती है। इसके लिए यह जरूरी है कि उन्हें स्कूली शिक्षा के साथ रचनात्मक व्यवहार की भी शिक्षा मिलनी चाहिए।

हमारे धर्म-ग्रंथों और विज्ञजनों का यह कथन पूर्णतया सत्य है कि गृहस्थ जीवन का और इस दृष्टि से मनुष्य समाज का सुचारु रूप से संचालन, सद्‌गुणी पत्नियों पर ही आधारित रहता है। इसलिए स्त्रियों को सुयोग्य गृहिणी का पद प्राप्त करने की सदैव चेष्टा करनी चाहिए। बालकों के निर्माण और इस दृष्टि से संपूर्ण राष्ट्र निर्माण का उत्तरदायित्व स्त्रियों पर आ जाता है। यह जिम्मेदारी सचमुच बहुत बड़ी है। इसका निर्वाह पूर्ण समझदारी के साथ ही किया जा सकता है।

आज संपूर्ण नारी जाति का कर्त्तव्य है कि निंदनीय वातावरण छोड़कर आगे बढ़ें और समाज-सुधार, नैतिक उत्थान तथा धार्मिक पुनर्जागरण का संदेश मानवता को दें। उन्हें इस ढंग से कार्य करना होगा कि पुरुषों को बल मिले, उनकी सोई शक्तियाँ जागें। इसके लिए उन्हें पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ना होगा। अपने कार्य-क्षेत्र का सफलतापूर्वक निर्वाह किए बिना विकास की गति को स्त्रियाँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रवाहमान नहीं रख सकतीं। उन्हें सारे उत्तरदायित्व समझदारी से निभाने पड़ेंगे।

यह शिक्षा हमारी बच्चियों को प्रारंभ से ही मिलनी चाहिए। सुशील, सुंदर आचरण युक्त एवं मधुरभाषिणी स्त्रियाँ जहाँ भी जाती हैं वहीं स्वर्ग उतर आता है। विपरीत परिस्थितियों, गरीबी और अभाव में भी विनम्र पत्नियाँ घरेलू वातावरण को खुशहाल तथा उल्लासमय बना सकती हैं। हमारी बेटियाँ सत्य, शिव और सौंदर्य गुणों को धारण करें, तो हमारा देश पुनः वह प्राचीन गौरव प्राप्त कर सकता है।

पतिव्रत ही नहीं, पत्नीव्रत भी

नियम है कि हम जिस प्रकार का व्यवहार दूसरे से चाहते हैं, वैसा व्यवहार स्वयं भी उससे करें। हम किसी से बुरा व्यवहार करते रहें और दूसरे से अच्छे व्यवहार की कामना करें, तो यह कामना कभी पूरी नहीं हो सकती। मनुष्य के अपने व्यवहार का ही प्रतिफल दूसरे के व्यवहार के रूप में उसे प्राप्त होता है।

लगभग हम सभी लोग यह चाहते हैं कि हमारी पत्नी सती-साध्वी बने और पतिव्रता होने के प्रमाण प्रस्तुत करे। किंतु इस बात की ओर जरा भी ध्यान नहीं देते कि क्या हम स्वयं पत्नीव्रत धर्म में विश्वास रखते हैं? यदि ऐसा है तो हम निश्चय ही पत्नी से पतिव्रता होने की अपेक्षा कर सकते हैं। अन्यथा हमारी यह कामना अनधिकार चेष्टा के समान ही होगी। हम स्वयं तो दुराचारी, दुर्व्यवहारी और दुष्ट बने रहें, नारी को अपनी दासी, सेविका मानकर मनमाना व्यवहार करते रहें और नारी सदा-सर्वदा अनुकूल बनी रहे, कान तक न हिलाए, जुबान तक भी न खोले, यह बहुत संभव नहीं। अत्याचार, अनाचार और दुर्व्यवहार सहन करने की एक सीमा होती है। उसके बाद विस्फोट तथा संघर्ष का ही क्रम आता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आज घर-घर जो कलह, क्लेश और अशांति का वातावरण दिखाई देता है उसका मुख्य कारण यही है कि पुरुष नारी के प्रति अपने कर्त्तव्यों का ठीक-ठीक निर्वाह नहीं कर रहा है। वह स्वेच्छाचारी बनकर नारी पर अन्याय तो करता ही है, साथ ही यह भी चाहता है कि वह न केवल चुपचाप सहन करती रहे, बल्कि उसके अनाचार में समर्थन तथा प्रसन्नता का भी पुट शामिल करे, यह अस्वाभाविक है, अवैज्ञानिक है। यों तो भारतीय नारी पूर्ण रूप से समर्पणशीला है। वह अपना अस्तित्व पति से पृथक रखने में विश्वास नहीं करती। पूर्ण आत्म-समर्पण करके निश्चिंत हो जाना चाहती है। ऐसा करती भी है। इसलिए कि वह पूर्ण शांति और संतोष पा सके, आत्मलाभ कर सके। वह बहुत दूर तक और भी बहुत प्रकार से वह पतिव्रता बनी रहना चाहती है। वह इसमें केवल प्रसन्नता ही नहीं, गौरव का भाव भी अनुभव करती है। किंतु खेद है कि पुरुष उसके इस निश्छल आत्म-समर्पण को न तो स्वीकार करता है और न मान्यता ही देता है। नारी के आत्म-समर्पण को विवशता अथवा कर्त्तव्य समझता है।

उसके समर्पण का स्वीकरण तो तभी पता चलता है जब पुरुष उसका आभार माने और तदनुरूप विश्वास करे। बदले में अपना सर्वस्व भी उसे दे। किंतु ऐसा होता कहाँ दीखता है। समर्पण पाकर पुरुष नारी का अधिकाधिक शोषण करने की कोशिश करता है और चाहता है कि वह उसकी उच्छृंखलता, स्वेच्छाचारिता और अत्याचार को मान्यता भी दे। किंतु ताली दोनों हाथों से बजती है। एक समर्पणशील बना रहे और दूसरा स्वेच्छाचारी बनकर उसे दुरदुराता रहे तो दूसरे पर उसकी प्रतिक्रिया होनी स्वाभाविक ही है। नारी सौ बार सहन कर लेगी, पर उसके बाद जब उसके नारीत्व और समर्पण का तिरस्कार सीमा पार करने लगे तो उसमें प्रतिरोध भाव का जागरण होगा ही।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समर्पण तो आत्म-शांति, सुरक्षा तथा आनंद के लिए किया जाता है न कि गुलाम अथवा दास बनकर स्वेच्छाचार सहन करने के लिए। पत्नी को सीता देखने के लिए पति को राम बनना ही होगा। इसके अतिरिक्त अन्य उपाय नहीं है। हम रावण बनकर पत्नी को सीता के रूप में देखना चाहते हैं तो यह कामना कभी पूरी नहीं हो सकती।

नारी के प्रति पुरुष के इस अन्याय तथा अत्याचार का कारण यह है कि वह उसके महत्त्व को भूल बैठा है। मूल रूप में पुरुष का अस्तित्व अपूर्ण है। नारी का समन्वय ही उसे पूर्ण करता है। योगी-वैरागियों अथवा यती-अवधूतों की बात तो छोड़ दीजिए। वे आत्मा की अखंड साधना में दिन और रात तल्लीन रहते हैं। उन्हें भोजन, वस्त्र अथवा अन्य सांसारिक सुविधाओं की चाह नहीं होती। संसार से उनके आदान-प्रदान का कोई व्यवहार नहीं चलता! यदि वे सामाजिक बनकर उसके सामान्य नियमों पर नहीं चलते हैं तो उससे कुछ लेते अथवा चाहते भी नहीं हैं। एकांत में रहकर और आवश्यकता पर कंद-मूल, शाक-पात से भोजन, वस्त्र की पूर्ति कर आत्मा को संपूर्ण जीवन का दान कर उसके उद्धार में तत्पर रहते हैं। उन्हें न तो गृहस्थ बसाने की आवश्यकता होती है और न कामना, किंतु सामान्य मनुष्य इस अपवाद में नहीं आ सकता। वह सृष्टि संपादन करने के लिए विवश है। घर बसाए बिना और नारी का संपर्क पाए बिना उसकी गुजर ही नहीं होती है। प्रकृति के इस नियम का न तो उल्लंघन ही किया जा सकता है और न अपवाद। पत्नी से पतिव्रत की अपेक्षा करने वाले को पत्नीव्रत का निर्वाह करना ही होगा। स्त्रियाँ स्वभावत: देवी होती हैं। उनमें पतिव्रत की भावना का अभाव नहीं होता। वे आत्म-समर्पण के सुख तथा महत्त्व को अच्छी तरह जानती हैं और उसी मार्ग पर चलती भी हैं। किंतु पुरुषों का चारित्रिक अवरोध, व्यावहारिक अनौचित्य उसके मार्ग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में बाधक बनकर अड़ जाता है। पत्नी का यह दिव्य स्वरूप और देवोपम स्वभाव अक्षुण्ण बना रहे, इसका विकास तथा अभिवर्द्धन हो चले, तो आवश्यक है कि पुरुष उसमें वांछित सहयोग देता चले। वह अपना बाह्य एवं आंतरिक स्वरूप देवताओं जैसा बनाए। देवी की श्रद्धा का अधिकार देवता को ही है, दुष्ट-दुराचारी को नहीं। पतिपरायणा पत्नी की पुनीत भावनाएँ दु:ख न जाएँ अथवा उन पर कोई ऐसा आघात न हो जाए जिससे वे विचलित हो उठें और कोई ऐसी प्रवंचना न हो जाए जिससे विद्रोह कर उठें, पति को सदैव इसका ध्यान रखना चाहिए। उभयपक्षीय कर्त्तव्यपालन से वह परिस्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं, जिसमें मनुष्य का गृहस्थ जीवन सार्थक होकर आत्म-कल्याण का साधन बन सकता है।

इस उभयपक्षीय कर्त्तव्य का महत्त्व समझते हुए शास्त्रों ने पतिव्रत धर्म और पत्नीव्रत धर्म दोनों को एक ही न्याय-तुला में तोला है और नर-नारी को समान निष्ठा के साथ अपने-अपने इन धर्मों का पालन करने का निर्देश किया है। पत्नी अपने धर्म कर्त्तव्य का पालन करती रहे और पति अपने कर्तव्य की उपेक्षा करता चले, तो इसका कुछ भी फल न होगा। इस पवित्र भावना तथा उसके आनंद का आविर्भाव तो तभी संभव होगा, जब दोनों पक्ष एकदूसरे के सहायक-सहयोगी बने रहें। एकांकी निष्ठा से प्रयोजन सिद्ध न होगा। राम का पत्नीव्रत-पालन सीता को पूर्ण पतिव्रता बनाए रखने में सहायक रहा है किंतु रावण की स्वेच्छाचारिता तथा अनैतिकता मंदोदरी को वैसा न बनाए रख सकी। सुविकसित, सजीव तथा सभ्य पतिव्रत तभी संभव है जब पति भी पत्नीव्रत के प्रति वैसा ही निष्ठावान बना रहे जैसे कि सती-साध्वी नारियाँ अपने धर्म कर्तव्य के प्रति गहन आस्था धारण किए रहती हैं। मनुष्य ही नहीं देवताओं में भी व्यक्तित्व की पूर्णता का अभाव रह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाता, यदि उनकी शक्तियों का सामंजस्य उनके साथ न होता। सावित्री, लक्ष्मी, पार्वती, शची, सीता आदि महामहिलाओं एवं देवियों ने ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इंद्र तथा राम जैसे अवतारियों के स्वरूप पूर्ण किए हैं। यदि ऐसा न रहा होता तो कदाचित इनके व्यक्तित्व में वह तेज, वह शक्ति और वह आदर न हो पाता, जो आज है। नारी पुरुष की शक्ति है, दुर्बलता नहीं। नारी का महत्त्व सदा से रहा है और सदैव रहेगा। स्वेच्छाचारी पुरुषों का अन्याय उसे अपहरण तो कर सकता है, किंतु कम नहीं कर सकता।

गृहस्थ जीवन में भी नारी का अनुदान पुरुष से किसी प्रकार कम नहीं है। यदि पुरुष बाहर जाकर उपार्जन का उपक्रम करता है, तो नारी घर में उसका भोजन, आराम का प्रबंध करती है। उसे अपनी ओर से नवजीवन तथा नवस्फूर्ति प्रदान करती है। यदि नारी का सहयोग न रहे तो बाहर से आठ-दस घंटे के परिश्रम से चूर पुरुष या तो चूल्हे-चौके से जानकारी करे अथवा भूखा पड़ा रहे। उसे न आराम मिले और न सुविधा। चार दिन में ही वह ऐसे नीरस तथा कठोर जीवन से ऊबकर कहीं भाग खड़ा होने की सोचने लगे। यदि पुरुष उपार्जन करता है तो नारी उसकी गृहस्थी बनाती, चलाती और सजाती है। जिससे पुरुष समाज में एक सद्गृहस्थ का आदर पाता है। इसके अतिरिक्त नारी का एक स्वरूप तो पुरुष की अपेक्षा कहीं अधिक महान एवं महत्त्वपूर्ण है और वह है माता का स्वरूप। नारी संतानों को जन्म देती, उसका पालन-पोषण करती और इस योग्य बनाती है कि वे अपने पैरों खड़ा हो सके। संतान प्रजनन और उसकी रचना जिसके आधार पर यह सृष्टि का चक्र चल रहा है, नारी का ही काम है। नर के लिए वह असंभव एवं असाध्य है। इस महत्ता तथा उपयोगिता को जानकर भी यदि नारी को हेय, अधिकारहीन अथवा बाधास्वरूप माना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाता है तो यह पुरुष के क्रूर अत्याचार के सिवाय और कुछ भी नहीं माना जाएगा।

पति और पत्नी में कोई अंतर नहीं। दोनों बराबर हैं। दोनों का मूल्य, महत्त्व, उपयोग, पद, अधिकार और कर्त्तव्य समान हैं। इस समान दशा में यदि पति, पत्नी से पतिव्रता होने की अपेक्षा करता है तो उसे भी पत्नीव्रत धर्म का पालन करना होगा। केवल इस आधार पर कि यह पुरुष है और कमाने वाला है, परिवार का पालन करता है; निरंकुश, मनोचारी और उच्छृंखल रहकर पत्नी से संपूर्ण आत्म-समर्पण करने और पूर्ण पतिव्रता होने की माँग करता है, तो यह उसका एकांगी अनधिकार होगा। पत्नी अपनी ओर से भले ही आत्म-कल्याण तथा आध्यात्मिक लाभ के लिए पति की भक्त बनी रहे। यह उसकी अपनी महानता एवं उदारता है। किंतु पुरुष को, ऐसे पुरुष को जो अपनी ओर से पतिव्रत धर्म का पालन नहीं करता, ऐसी आशा रखने का कोई अधिकार नहीं है।

पतिव्रत धर्म का संबंध केवल शारीरिक समर्पण से ही नहीं है। इसका संबंध आत्मा की पवित्र श्रद्धा तथा निष्ठा से है। पति की आकांक्षा है कि पत्नी हृदय से श्रद्धालु तथा आत्मा से निष्ठावती बनी रहे, वह मुझे देवता मानकर पूजे तथा हर प्रकार से तन-मन पूर्वक अपना समस्त प्रेम, समस्त प्रसन्नता और संपूर्ण अस्तित्व-व्यक्तित्व को लेकर मुझको समर्पित हो जाए तो पति को भी अपने पत्नीव्रत धर्म द्वारा उसकी पात्रता सिद्ध करनी होगी। श्रद्धा सज्जन के लिए, सद्गुणों के लिए उत्पन्न होती है। दुष्ट, दुराचारी के लिए घृणा और द्वेष का उठना ही स्वाभाविक है। साधक भगवान की, देवताओं की आराधना-उपासना इसलिए करते हैं कि उनको उनकी श्रेष्ठताओं की परिपूर्णता पर विश्वास रहता है। भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस की पूजा तो कोई दुष्ट-दुरात्मा ही कर सकता है। आमतौर से तो उनके प्रति सार्वभौम घृणा ही रहती है। उनके न तो कहीं मंदिर देखे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाते हैं और न कोई विवेकशील उनकी आराधना करता है। यह बात सदाचारी एवं दुराचारी पुरुषों के विषय में भी लागू होती है। जिन पुरुषों ने शारीरिक और मानसिक व्यभिचार में अपने को स्वच्छंद माना है, वे पत्नी से उस श्रद्धा तथा आत्मिक निष्ठा की आशा नहीं कर सकते जो पतिव्रत धर्म का मूल है। मनुष्यों की सद्भावनाएँ एकदूसरे को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। प्रेम से प्रेम और द्वेष से द्वेष की वृद्धि होती है। दिया हुआ व्यवहार ही उलटकर प्रतिदान में पाना हो सकता है। उसे ऐसा करना ही होगा और इसी मार्ग से आत्म-कल्याण की दिशा में अग्रसर होना होगा। घर-गृहस्थी अथवा नारी आध्यात्मिक मार्ग में बाधा है, ऐसी धारणा गलत है। यह अनुभव उन मानव, पशुओं का ही हो सकता है जो नारी को विषय-वासना का साधन मानने के सिवाय उसके पवित्र, उज्ज्वल तथा महान स्वरूप को नहीं देख पाते। वे नारी को शक्ति, पुरुष की पूरक न समझकर उसका अवांछनीय उपयोग किया करते हैं, फलतः विपरीत फल पाने के भागी बनते हैं।

नारी यदि आध्यात्मिक लाभ में बाधा होती तो अध्यात्म के धनी भारतीय ऋषि-मुनि सदा अविवाहित रहते। वे वासना मुक्त महापुरुष उसकी छाया तक अपने निकट न आने देते। इसके विपरीत लगभग सभी ऋषियों के पत्नियाँ रही हैं और अनेकों के बाल-बच्चे भी। ऋषियों में प्रधान सप्तऋषियों के पत्नियाँ भी थीं और बच्चे भी। वसिष्ठ ऋषि के बालकों को विश्वामित्र द्वारा मार डाले जाने की कथा प्रसिद्ध ही है। लोमश ऋषि के पुत्र शृंगी ऋषि ने अपने पिता के अपमान से क्रुद्ध होकर परीक्षित को शाप दिया था। वसिष्ठ, अत्रि, याज्ञवल्क्य, स्वायंभुव, गौतम आदि ऋषि-मुनियों की पत्नियाँ अरुंधती, अनुसूया, मैत्रेयी, शतरूपा, अहिल्या आदि वनवास में उनके साथ ही रहती थीं। यदि वे साधना और तपस्या में बाधक होतीं तो ये ऋषि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने योग से किस प्रकार कृतकृत्य हो पाते। नारी के तपोमार्ग में बाधक होने की धारणा गलत तथा भ्रामक है।

वास्तविकता यह है नर-नारी एकदूसरे के पूरक और अध्यात्म मार्ग के सहायक हैं। नर-नारी की रचना ही इस प्रकार हुई है कि वे एकदूसरे की अपूर्णताओं को अपनी विशेषताओं से पूर्ण करके पारस्परिक सहयोग से एक सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण करें। पत्नी का अर्द्धांगिनी और पुरुष का अर्द्ध-नारीश्वर। दोनों का सम्मिलित स्वरूप ही एक पूर्ण इकाई बनता है। नर-नारी जीवन गाड़ी के दो पहियों के समान हैं। यदि इनमें समानता तथा परस्पर सामंजस्य का अभाव हो, तो यह गाड़ी कुछ दूर भी तो न चल सके। नारी का महत्त्व नर से किसी प्रकार भी कम नहीं है। जोर-जबरदस्ती शरीर समर्पण तथा प्रेम का अभिनय करा लेने वाले पुरुष नारी से सब कुछ पा सकते हैं, किंतु उसकी वह आत्मजन्य निष्ठा तथा श्रद्धा नहीं पा सकते जो गृहस्थ जीवन के सुख-शांति का हेतु होने के साथ आध्यात्मिक विकास में भी सहायक होती है।

पति-पत्नी का समान धर्म-कर्तव्य

नारी के लिए जो महत्त्व पतिव्रत का है, वही ज्यों का त्यों नर के लिए पत्नीव्रत का है। जिस प्रकार नारी पतिव्रत धर्म का अवलंबन करके अपने आत्म-कल्याण, पारिवारिक स्वर्ग एवं सुसंतति की संभावना उत्पन्न करती है उसी प्रकार पुरुष पत्नीव्रत धर्म का पालन करते हुए इन्हीं विभूतियों एवं सिद्धियों को उपलब्ध करता है।

पतिव्रत धर्म और पत्नीव्रत धर्म एकदूसरे के पूरक हैं। नर और नारी की रचना इस प्रकार हुई है कि एकदूसरे की अपूर्णताओं को पूर्ण करके पारस्परिक सहयोग से एक सर्वांगपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करें। पत्नी को अर्द्धांगिनी कहा गया है, यही बात पति के लिए भी कही जा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकती है। दोनों का सम्मिलित स्वरूप ही एक परिपूर्ण इकाई बनता है। दो हाथ, दो पैर, दो आँखें, दो नथुने, दो कान, दो फेफड़े मिलाकर जिस प्रकार अपने-अपने प्रयोजन को पूरा करते हैं उसी प्रकार नर-नारी भी एक सर्वांगपूर्ण जीवन की आवश्यकता पूरी करते हैं। आँख, नाक, कान, हाथ, पाँव, नथुने, फेफड़े आदि युग्मों में से एक यदि नष्ट हो जाए; बीमार, अशक्त, दुर्बल या अव्यवस्थित हो, तो शरीर में उपहासास्पद कुरूपता बढ़ती है। लोग उसे काना, भेंड़ा, लँगड़ा, टोंटा, नकटा आदि कहकर चिढ़ाते हैं। बात वास्तविक होती है फिर भी उसमें अपमान अनुभव किया जाता है क्योंकि अपूर्णता अपमान की ही बात होती भी है। मानव जीवन भी गाड़ी के दो पहियों की तरह पति-पत्नी रूपी दो संतुलित माध्यमों पर ठीक प्रकार लुढ़कता है। इनका पारस्परिक ताल-मेल न खाता हो, तो गाड़ी को कुछ दूर तक घसीट भले ही लिया जाए, उसमें लंबी यात्रा पूरी नहीं हो सकती। पति-पत्नी के बीच यदि संतुलन और सामंजस्य न हो तो किसी भी गृहस्थ का भविष्य अंधकारमय ही बना रहेगा।

जिन्हें सार्वजनिक सेवा या किसी विशेष लक्ष्य से इतनी तन्मयता होती है कि गृहस्थ पालन एवं आजीविका उत्पादन में समय का एक अंश भी बरबाद न हो, ऐसे विशिष्ट मनस्वी लोगों के लिए बिना गृहस्थ बनाए भी काम चल सकता है। वे आजीवन अविवाहित रहना चाहें तो रह भी सकते हैं। जिन्हें कोई शारीरिक या मानसिक रोग है और गृहस्थ के उत्तरदायित्वों को निभाने में असमर्थ हैं उनके लिए भी अविवाहित रहना ठीक है। पर सामान्य मनुष्य को गृहस्थ बनना ही पड़ता है। इसके बिना उसकी अपूर्णता प्रगति के पथ में भारी अड़चन उत्पन्न करती है और उस अड़चन के कारण शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में मनुष्य पिछड़ा हुआ ही पड़ा रहता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राचीनकाल के इतिहास पर दृष्टि डालने से प्रतीत होता है कि कुछ थोड़े से अपवादों को छोड़कर प्रायः सभी गृहस्थ थे। योग साधना एवं वनवास में रहते समय भी उनकी पत्नियाँ साथ रहती थीं। ब्रह्मचर्य पालन या न पालन मनुष्य की मनोदशा पर निर्भर है। गृहस्थ में भी आवश्यक ब्रह्मचर्य रह सकता है और अविवाहित लोग भी अपना सत्यानाश करते रह सकते हैं। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए गृहस्थ मुनि भी सपत्नीक रहते थे। ऋषियों में प्रधान सप्तऋषियों की भी पत्नियाँ थी, उनके बच्चे भी थे।

इस प्रकार की कथाओं का वर्णन यहाँ किया जाए तो प्रायः प्रत्येक ऋषि की धर्मपत्नी और बालकों की सुविस्तृत चर्चा की जा सकती है। पत्नी-बच्चों को त्यागकर भाग खड़े होने का वैराग्य तो अवैदिक, अशास्त्रीय और अनैतिक है। यह प्रथा तो बुद्धकाल में पड़ी थी, जिसका वैदिक धर्मानुयायी सदा से विरोध करते चले आ रहे हैं। वानप्रस्थ तो पत्नीसमेत होता ही है। संन्यास में पत्नी की रुचि और सुविधा प्रधान रहती है। वह चाहे तो अपने पुत्र-पौत्रों के साथ रहे, चाहे तो पति के साथ परिव्राजा या कुटीचक के रूप में उनका सहचरत्व ग्रहण करके वैराग्य धर्म का पालन करती रहे।

देवताओं में सभी गृहस्थ हैं। ईश्वर के अवतारों में भी अधिकांश ने तो अपना गृहस्थ बनाया है। ब्रह्मा की पत्नी सावित्री, विष्णु की लक्ष्मी, शंकर की पार्वती, इंद्र की शची, वृहस्पति की अरुंधती प्रसिद्ध हैं। भगवान राम और कृष्ण, जिनका नाम लेकर हम भवसागर से पार होते हैं, गृहस्थ ही तो थे। दांपत्य जीवन की आवश्यकता एवं उपयोगिता को स्वीकार करते हुए उन्होंने मर्यादा पालन के लिए एक सद्गृहस्थ के रूप में ही अपना चरित्र प्रस्तुत किया है। जीवन की सुविधा तो दांपत्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन में बढ़ती है, साथ ही कितने ही जीवन लक्ष्यों की पूर्ति में भी भारी सहायता मिलती है।

जो सुविधा नारी को नर का सान्निध्य स्वीकार करने में है, वही नर के लिए नारी का आश्रय लेने में है। तत्त्वतः वे दोनों एकदूसरे की अपूर्णताओं को अपनी-अपनी विशेषताओं के द्वारा पूर्ण करते हैं। इनमें से न कोई बड़ा है और न छोटा। न किसी के अधिकार कम हैं और न अधिक। न किसी का गौरव न्यून है और न अधिक। हाथ, पैर, कान, आँख में से किसे ऊँचा कहा जाए किसे नीचा? किसे बड़ा माना जाए, किसे छोटा? गाड़ी के दो पहियों में से किसे महत्त्वपूर्ण माना जाए और किसे महत्त्वहीन? वस्तुतः दोनों ही महत्त्वपूर्ण हैं, इनमें से किसी को भी तुच्छ नहीं कहा जा सकता। यदि श्रेष्ठता-कनिष्ठता ढूँढ़ी भी जाए तो नारी का पलड़ा ही भारी पड़ता है। बालक को जन्म देने से माता का अनुदान ही अधिक रहता है। इसलिए पिता से माता को श्रेष्ठ माना गया है। पति-पत्नी में भी नारी प्रधान है। भगवान के नाम युग्मों में पत्नी का नाम पहले है, पति का पीछे। लक्ष्मीनारायण, उमाशंकर, सीताराम, राधेश्याम जैसे नामों से इसी तथ्य का प्रतिपादन होता है।

पातिव्रत धर्म पालन करती हुई नारी जिस प्रकार अपने जीवन को सार्थक और संबंधित वातावरण को स्वर्गीय बनाती है, ठीक वही बात पत्नीव्रत धर्म पालन करते हुए पुरुष भी करता है। इसलिए शास्त्रकारों ने पातिव्रत धर्म और पत्नीव्रत धर्म को एक ही न्याय-तुला में तोला है और नर-नारी को समान निष्ठा के साथ अपने-अपने उन धर्म-कर्त्तव्यों का पालन करने का निर्देश दिया है। पत्नी को अपने शरीर का आधा अंग मानकर उसे आत्मसात करने में, उसकी प्रगति, प्रसन्नता एवं सुविधा के लिए अधिकाधिक त्याग-बलिदान करने में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पति की सदाशयता उसी प्रकार परखी जाती है, जैसे पत्नी की आत्मसमर्पण करते हुए पातिव्रत पालन करने में। वह एकांगी हो तो फलप्रद न होगा, एक पक्ष चाहे तो कर्त्तव्य भावना में उसे किसी प्रकार निभाता रह सकता है पर उसका विकास संभव न होगा, विकास तो दूसरे पक्ष के आवश्यक सहयोग पर निर्भर है। ताली दोनों हाथों से बजती है। राम का पत्नीव्रत सीता को पतिव्रता बनाए रहा, पर मंदोदरी ने रावण के मरते ही विभीषण से पुनर्विवाह कर लिया। यह तथ्य बताते हैं कि सुविकसित सजीव पातिव्रत तभी संभव है जब पति भी पत्नीव्रत के प्रति वैसा ही निष्ठावान हो, जैसा कि सती-साध्वी नारियाँ अपने धर्म-कर्त्तव्य के प्रति गहन आस्था धारण किए रहती हैं।

पिछले दिनों परिस्थितियों से अनुचित लाभ उठाने की दुष्प्रवृत्ति ने मानव मन में घुस बैठने का जोरों से प्रयत्न किया है, फलस्वरूप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भयानक प्रवृत्तियों का बोलबाला हो चला है। शिशुओं का पालन और गृह-व्यवस्थापिका का महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व सँभालने के कारण नारी का कार्यक्षेत्र घर रहा है। घर में रहते हुए बौद्धिक विकास, चातुर्य एवं अनुभव संपादन करने के अवसर कम मिलते हैं। फलतः नारी बौद्धिक दृष्टि से कुछ पिछड़ी रह जाती है। भाग-दौड़ एवं कठिन श्रम जैसा कि नर को करना पड़ता है वैसा नारी को नहीं करना पड़ता, फिर प्रसव एवं शिशु पालन का प्रत्यक्ष दबाव उस पर पड़ता है, जिससे स्वास्थ्य भी कुछ न कुछ पिछड़ा ही रहता है। उपार्जन के माध्यम घर से बाहर होते हैं, पुरुष की स्थिति उसे इस कार्य के लिए समर्थ बनाती है; इसलिए वह 'कमाऊ' कहलाता है और नारी उससे भी अधिक श्रम करते रहने पर भी 'बिना कमाऊ' रहती है। पुरुष कमाकर लाने पर गर्व करता है और इसके बदले में अपना वर्चस्व एवं अधिकार प्रदर्शित करता है। परिस्थितियों ने बुद्धि, स्वास्थ्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और उपार्जन की दृष्टि से नारी को नर से पिछड़ा रहने दिया है पर उसका अर्थ यह कदापि नहीं कि ये क्षमताएँ उनमें नहीं हैं या कम हैं। जिन देशों में उन्हें समुचित अवसर मिलता है, वे पुरुषों की तुलना में अपनी उपयोगिता कुछ बढ़-चढ़कर ही सिद्ध करती हैं।

शिक्षा, स्वास्थ्य और उपार्जन के कार्यक्षेत्र में समाज ने नारी को पीछे छोड़ा और नर को आगे बढ़ाया। इससे पुरुष को अधिक विनम्र, अधिक कृतज्ञ और अधिक उदार होना चाहिए था। नारी ने गृह क्षेत्र के कठिन उत्तरदायित्व को स्वीकार कर पुरुष को अधिक समर्थ बनाने का अवसर दिया तो इसमें उदारता उसी की तो मानी जाएगी। यदि नारी यह स्वीकार न करती, अपने स्वतंत्र विकास पर अड़ जाती, तो नर को चौका-चूल्हा और गृह व्यवस्था स्वयं ही सँभालनी पड़ती। कितने ही देशों में पुरुषों को शिशु पालन, भोजन, छादन तथा दूसरे गृह कार्य करने पड़ते हैं और नारी उपार्जन तथा अन्य सामाजिक कार्यों को सँभालती है। वहाँ उनकी प्रतिभा एवं स्थिति नर से कहीं अच्छी होती है। ऐसे देशों की स्त्रियों के लिए यही उचित है कि वे पुरुषों को धन्यवाद दें कि गृह कार्यक्रम का अपेक्षाकृत कहीं अधिक कठिन कार्य उनने अपने कंधे पर लेकर उन्हें बाहर का सरल और मनोरंजक कार्य करने की छूट दे दी। इसी प्रकार जिन देशों में वह सुविधा पुरुषों को प्राप्त है, वहाँ उनका धर्म है कि नारी की उदारता से प्राप्त हुए इस अवसर का आभार मानें और इसका प्रत्युपकार चुकाने के लिए उचित से भी अधिक सौहार्द्र, सज्जनता एवं उदारता का परिचय दें।

खेद की बात यह है कि नारी की उदारता से प्राप्त सुविधा का प्रत्युपकार चुकाने के स्थान पर उसे हेय और हीन माना जाने लगा और अपनी विकसित सामर्थ्य के अहंकार में नारी को पददलित, प्रतिबंधित एवं उत्पीड़ित किया गया। ऐसे नियम-उपनियम बनाए गए जिससे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसके मानवीय अधिकार भी छिन गए। परदा प्रथा भले ही यवन शासन काल में हिंदू ललनाओं के सतीत्व की रक्षा के लिए सदुद्देश्य से प्रचलित की गई हो, पीछे तो उसने एक कानून एवं परंपरा का रूप धारण कर लिया। पुरुष की अपेक्षा हेय एवं हीन, असभ्य एवं अविश्वस्त होने की क्रूर मानवता परदा प्रथा के पीछे छिप-छिपकर नियति पर व्यंग्य करती रहती है। मनुष्य को मनुष्य के आगे मुँह ढककर रहना पड़े, एक मनुष्य दूसरे के आगे खुले शब्दों में बोल न सके, यह प्रतिबंध मानवीय सभ्यता का इतना बड़ा तिरस्कार है कि हमें अपनी इस अनैतिकता को धर्म-मान्यता घोषित करते हुए शरम से डूबकर ही क्यों न मर जाना चाहिए।

भारतीय नारी का वर्तमान पिछड़ापन पुरुष वर्ग की अमानुषिक क्रूरता का प्रतिफल है। इस पिछड़ेपन को उसने ईश्वरप्रदत्त वरदान माना और प्राप्त सुविधा का बुरे से बुरा दुरुपयोग का एक बड़ा प्रमाण यह है कि पातिव्रत धर्म नारी के लिए तो आवश्यक माना जाता है। पर पुरुष उस प्रतिबंध से बचा रहना चाहता है और स्वयं इस संबंध में अनैतिकता एवं स्वच्छंदता का आचरण करना चाहता है। कामी, विषयी, लंपटी, दुराचारी और अनेकों अश्लील कुकर्मों में लगे हुए पुरुष भी अपनी पत्नी को सीता, सावित्री से कम नहीं देखना चाहते।

बंधन, उत्पीड़न, त्रास एवं दमन के बल पर नारी को शारीरिक-कामवासनात्मक पातिव्रत निभाने के लिए विवश किया जा सकता है। पर पातिव्रत तो एक योग साधना है, इसका विषय श्रद्धा से है। नारी जन्मत: श्रद्धामयी है तो पुरुषों को भी श्रद्धामय होना चाहिए। परस्पर एकदूसरे को श्रद्धा-सम्मान की दृष्टि से देखने की शालीन व्यवहार युक्त संस्कृति और सभ्यता का विकास अनेकानेक समस्याओं का उपचारात्मक उपाय है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य की सद्भावनाएँ एकदूसरे को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। सद्भावना से सद्भावना और दुर्भावना से दुर्भावना की वृद्धि होती है। बलवान का उत्तरदायित्व दुर्बल से अधिक है। आज पुरुष समर्थ है तो उसका कर्त्तव्य है कि अपने आचरण और व्यवहार से ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करे जिनके रहते हुए पत्नी पातिव्रत के अतिरिक्त और कोई बात सोच ही न सके। स्त्रियाँ स्वभावत: देवी होती हैं। उनके नाम के आगे देवी शब्द लगाने की प्रथा परंपरा वास्तविकता के आधार पर ही प्रचलित हुई है। भगवती देवी, शकुंतला देवी, राधा देवी, सावित्री देवी, विमला देवी आदि नामों में इस सचाई का ही उद्घोष है कि नारी में दैवी तत्त्व अत्यधिक मात्रा में विद्यमान है। यह मात्रा अक्षुण्ण बनी रहे, सुविकसित हो और परिपुष्ट होती चले, इसके लिए यह आवश्यक है कि पुरुष अपना आंतरिक स्वरूप देवताओं जैसा बनाए रहे। भारतीय नारी स्वभावत: पतिव्रता होती है। कुलटा तो उसे पुरुषों की दुष्टता बहकाकर ही बना देती है। पतिपरायणता की भावनाएँ विद्रोह न करने लगें, इतना ध्यान रखना पति का काम है। उसे अपने को आदर्श पति के रूप में रखना चाहिए और निष्ठापूर्वक पातिव्रत धर्म का पालन कराना चाहिए, जैसे कोई सती-साध्वी नारी पातिव्रत धर्म का पालन करती है। उभयपक्षीय कर्त्तव्य पालन से ही वह परिस्थितियाँ उत्पन्न हो सकती है जिनमें मनुष्य का गृहस्थ जीवन सार्थक हो और परिवार में स्वर्गीय वातावरण का आनंद लाभ किया जा सके।

रामायण का आदर्श—न पति भूले न पत्नी

पुरुष जब तक अकेला था, तब तक उसे संसार में भी कुछ सरसता, कर्त्तव्य भावना, परोपकार, प्रेम आदि का व्यावहारिक आनंद नहीं मिलता था। आत्म-कल्याण के लिए भी उसे किसी ऐसे पात्र की आवश्यकता थी, जो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्ति के साधनों में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसे सर्वविध सहयोग दे सके। ब्रह्मा ने उसके लिए नारी की उत्पत्ति की और उसे पुरुष की सहचरी के रूप में प्रतिष्ठित किया।

जीवन के कठोर कर्त्तव्य, आघात-प्रतिघात में भी विलग न हों, उन्हें सहचर कहते हैं। स्त्री के लिए सहचरी और पति के लिए जीवन-साथी संबोधित करने का भावात्मक रहस्य भी यही है कि पति-पत्नी कभी परस्पर एकदूसरे से विलग न हों, चाहे जीवन में कितने उतार-चढ़ाव आएँ। संपन्न अवस्था हो या अभाव की स्थिति, सौंदर्य अक्षुण्ण बना हो अथवा रोग-शोक ने उसे नष्ट कर दिया हो, यौवन हो या वृद्धावस्था, सहचरत्व की निष्ठा ही दांपत्य जीवन का सच्चा सुख और स्वर्ग है। जहाँ पति-पत्नी में यह भावना रहती है वहाँ प्रेम, आत्मीयता, अभिन्नता के सुख की आध्यात्मिक निर्झरिणी सदैव बहती रहती है।

रामायण में इस तथ्य को अनेक स्थलों में व्यक्त किया गया है। हम पति-पत्नी के संबंध सनातन, जन्म-जन्म से मानते हैं, उसका भी कारण दांपत्य जीवन की निष्ठा और पवित्रता को बनाए रखना है। अयोध्या कांड में भगवती गौरी की कई अंतर्कथाएँ हैं। सती जी जब भी जन्म लेती हैं, शंकर जी ही उनके आराध्य होते हैं। शंकर जी को पति के रूप में पाने के लिए वह कठोर से कठोर तप करती हैं –

अति सुकुमार न तनु तप जोगू।
पति पद सुमिरि तजेउ सब भोगूङ्क
नित नव चरन उपज अनुरागा।
बिसरी देह तपहि मनु लागाङ्क
संवत सहस मूल फल खाए।
सागु खाई सत बरष गँवाएङ्क

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कछु दिन भोजन बारि बतासा।
किए कठिन कछु दिन उपवासाङ्क
बेल पाति महि परई सुखाई।
तीनि सहस संवत सोई खाईङ्क
पुनि परिहरे सुखानेउ परना।
उमहिं नाम तब भयऊ अपरनाङ्क
अस तपु काहुँ न कीन्ह भवानी।
भये अनेक धीर मुनि ज्ञानीङ्क

यह कठोर व्रत कुमारी पार्वती ने इसलिए नहीं किए कि वह कोई साधन संपन्न और बहुत सुंदर पति प्राप्त करें, तप का उद्देश्य काम-वासना की तृप्ति भी नहीं था। वह तो जन्म-जन्मांतरों के आध्यात्मिक प्रेम की प्राप्ति के लिए था। प्रेम ही तो दांपत्य जीवन की पवित्रता है। सती जी की परीक्षा ली जाती है तो वह सप्तऋषियों से कहती हैं-

अब मैं जन्म सम्भु हित हारा।
को गुन दूषन करै विचाराङ्क
तुम्हरे जान कामु अब जारा।
अब लगि सम्भु रहे सविकाराङ्क
हमरे जान सदा शिव जोगी।
अज अनवद्य अकाम अभोगीङ्क
जौ मैं शिव सेये अस जानी।
प्रीति समेत कर्म मन बानीङ्क
तौ हमार पन सुनहु मुनीसा।
करिहहिं सत्य कृपानिधि ईसाङ्क
जनम कोटि लगि रगर हमारी।
बरउँ सम्भु न तु रहहुँ कुमारीङ्क

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आज भी हमारे घरों में वृद्ध माताएँ कुमारी कन्याओं से करवा चौथ आदि विशिष्ट पर्वों पर तपश्चर्याएँ कराती हैं। तप से आत्मा का उत्थान होता है। मानसिक और आत्मिक द्वेषों का शमन होता है। कन्याएँ इस प्रकार जब आत्मिक पवित्रता के साथ पतियों का वरण करती हैं तभी दांपत्य जीवन की निष्ठा भी जीवित रहती है। आज भी जबकि संसार के अन्य भागों में दांपत्य संबंधों में बिगाड़, झगड़े, तलाक इत्यादि होते हैं और हमारे देश का दांपत्य जीवन तब भी पर्याप्त पवित्रता धारण किए हुए है। यद्यपि पाश्चात्यपन उसे भी प्रभावित कर रहा है पर धर्म के नए संचार से ऐसा न होने पाएगा और न होने देना चाहिए।

हमारी धार्मिक मान्यताओं में कुछ अंधविश्वास जुड़ गए हैं, तो भी रामायण में जो पतिव्रता स्त्रियों के लिए कर्त्तव्य निर्धारित किए गए हैं वह निश्चय ही दांपत्य जीवन को सुखी एवं संपन्न बनाने वाले हैं। सीता जी का आदर्श भी ऐसा ही है। उन्होंने भारतीय नारी का मार्गदर्शन इन शब्दों में किया है–

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई।
प्रिय परिवारु सुहृद समुदाईङ्क
सासु ससुर गुरु सजन सहाई।
सुत सुन्दर सुसील सुखदाईङ्क
जहँ लगि नाथ नेह औ नाते।
पिय बिनु तियहि तरनिहु ते तातेङ्क
तनु धनु धामु धरनि पुर राजू।
पति विहीन सब सोक समाजूङ्क
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी।
तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारीङ्क

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दांपत्य जीवन में प्रेम, विश्वास बनाए रखने, कर्त्तव्य पालन, सेवा और सहयोग के लिए भी स्त्री और पुरुष का सदैव पास बने रहना आवश्यक है, विछोह हो भी तो वह अल्पकालीन ही हो। जो स्त्रियाँ अपने पिता के घरों को बार-बार जाने की इच्छा करती हैं, पति के कार्यों में सहयोग न देकर संबंधियों, सहेलियों की समीपता के लिए भागती हैं; पता नहीं, उनका पारलौकिक जीवन क्या होता हो, पर यह बात असंदिग्ध है कि उनके पारिवारिक जीवन का स्नेह-आनंद टूट जाता है। आशंकाएँ भर जाती हैं। परस्पर द्वेष-भाव बढ़ता है और कटुता, क्लेश, कलह के क्षण उत्पन्न हो उठते हैं।

सयानी सीता इस बात को जानती थीं। वह सास और ससुर की सेवा को भी अपना परम कर्त्तव्य मानती हैं। किंतु पति को इस सबसे सर्वोच्च मानती हैं। इसलिए वन के घोर कष्ट, नदी, पर्वत, काँटे, भालू, बंदरों से भय, राक्षसों द्वारा मारे जाने की आशंका होते हुए भी उन्होंने कहा-

मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू।
तुम्हहिं उचित तप मो कहुँ भोगू॥
ऐसेउ वचन कठोर सुनि, जौ न हृदय बिलगान।
तौ प्रभु विषम वियोग दुःख, सहिहहिं पाँवर प्रान॥

सीता जी ने पतिव्रत धर्म के प्रति अपनी अगाध आस्था व्यक्त की, कठोर से कठोर तप सहे और इस प्रकार दांपत्य जीवन की निष्ठा और पवित्रता के प्रति कर्त्तव्य का नारी पक्ष जीत लिया। आज पतिव्रताएँ सीताजी का जीवन चरित्र पढ़ती हैं और इस कठोर व्रत को अपने जीवन में धारण करती हैं। सती अनुसूया का सीता जी को दिया वरदान सत्य होता है-

सुनु सीता तब नाम, सुमिरि नारी पतिव्रत करहिं।
तोहिं प्रानप्रिय राम, कहिऊँ कथा संसार हित॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दांपत्य का निर्माण अकेले स्त्री नहीं करती, पुरुषों का भी संयुक्त है। इसलिए नारी का पतिव्रता होना ही पर्याप्त नहीं, पुरुषों का पत्नीव्रत पालन करना भी उतना ही आवश्यक है। रामायण इस बात की भी पुष्टि करती है–

एक नारि व्रत रत सब झारी।
ते मन बच क्रम पति हितकारी॥

उस समय सब पुरुष एक पत्नीव्रत का पालन करते थे तभी तो तत्कालीन गृहस्थ जीवन उतना सुखी था। भारतीय जीवन का वह आदर्श आज भी जीवित है। मर्यादा पुरुष के रूप में राम ने भी उसका पालन किया।

राम राजकुमार थे। उनके सौंदर्य का तो कहना ही क्या था–

राम काम सत् कोटि सुभग तन।
दुर्गा कोटि अमित अरि मर्दन॥
सक्र कोटि सत् सरिस बिलासा।
नभ सत् कोटि अमित अवकासा॥

सौंदर्य जहाँ आत्मा की तृप्ति है वहाँ वह दूषण भी है। चरित्र को गिराने में सौंदर्य ही प्रधान माना गया है। राम यद्यपि राजा थे, सौंदर्य की खान थे, तथापि वह जानते थे, जिन घरों में चरित्र का अभाव होता है वहाँ से सुख, संपत्ति और गुण पलायन कर जाते हैं। इसलिए उन्होंने सदैव ही एक पत्नीव्रत का निष्ठापूर्वक पालन किया।

राम का सीता के प्रति अगाध स्नेह था। वह जानते थे कि वन में अनेक कष्ट हैं तो भी उन्होंने प्रेमवश ही सीता जी को साथ ले लिया था। मन में वे सीता जी की रक्षा ही न करते थे, उनकी सुविधाओं को प्राथमिकता ही न देते थे, वरन वे हाथ से सीता जी की सेवा भी करते थे–

एक बार चुनि कुसुम सुहाये।
निजकर भूषन राम बनाये॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सीतहिं पहिराये अति सादर।
बैठे फटिक सिला पर सुन्दरङ्क

इस प्रसंग से हमारे समाज के इस मिथ्या विश्वास का अंत हो जाता है जिससे कहा जाता है कि पुरुष को स्त्री की सेवा नहीं करनी चाहिए। भगवान राम ने यह साबित किया है, दांपत्य जीवन के उल्लास, आनंद और एकता के लिए जो अधिकार पुरुष का स्त्री पर है, वही स्त्री का पुरुष पर भी है। दोनों को एकदूसरे के प्रति वासना रहित सेवा, सहिष्णुता और संरक्षण का ध्यान रखना चाहिए। एकदूसरे की अभिरुचियों को विशुद्ध कर्त्तव्य-भावना से पूरा करना परम कर्त्तव्य समझा गया है।

जीवन को सुविकसित, व्यवस्थित और सुख-शांतिमय बनाने के लिए मनुष्य परिवार बसाता है, विवाह करता है और प्रजा-प्रणयन करता है। उसे आशा रहती है कि पत्नी उसकी सेवा-सहायता करेगी, बच्चे अपनी किलकारियों से दु:ख-दरद भुला देंगे और यह निश्चित रूप से कर्त्तव्य करता हुआ, जीवन को धीरे-धीरे विकसित करता हुआ मानव-ध्येय की ओर बढ़ता जाएगा। बच्चे बड़े होंगे, बुढ़ापे में सहायक होंगे, जिससे उस अंतिम चरण में और अधिक निश्चिंतता और शांति मिलेगी। इस प्रकार परलोक के लिए साधना करने के लिए पूरा-पूरा अवसर मिलेगा।

आज कितने ऐसे गृहस्थ देखने को मिल सकते हैं जो पारिवारिक जीवन का प्रयोजन पाते हुए शक्तिमान, व्रतवान और कर्तृत्ववान बनते हों?

इसका अर्थ यह नहीं कि आत्म-विकास के लिए मनुष्य को घर-बार नहीं बसाना चाहिए और एकाकी ही जीवन-नौका को खेते हुए ध्येय तट की ओर ले जाना चाहिए। यदि सभी व्यक्ति यह सोच लें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और करने लगें, तो संसार में उतनी व्यवस्था और अवसर भी न दिखाई दें, जो आज थोड़ी-बहुत उलटी-सीधी दिखाई दे रही है। एकाकी जीवन इस पारिवारिक जीवन से भी बुरा और असहनीय सिद्ध होगा। मनुष्य एकाकी जीवन से त्रस्त होकर ही घर-बार के जीवन में आया है और अब तक वह परिवार के पावन प्रयोजन को समझता और पूरा करता रहा, उसका आशातीत विकास होता रहा। वह शांतिपूर्ण वातावरण में व्रतमय जीवन के साथ शक्तिमान और कर्तृत्ववान बनता रहा। समाज, संसार और मानवता की सेवा करता हुआ खुद भी उठता रहा और उसको भी उठाता रहा। इस सर्वांगीण सुविधा के कारण ही गृहस्थाश्रम को परम पुनीत आश्रम और सद्गृहस्थ को योगी, यती और तपस्वी कहा जाता रहा। किंतु खेद है कि आज की असफल गृहस्थियाँ नरक बनती जा रही हैं और गृही हर दशा में दीन-हीन, निर्बल और दयनीय। मानव जीवन की वर्तमान दुर्दशा में गृहस्थाश्रम का दोष नहीं है। दोष है उन गृहस्थों का जो वैवाहिक जीवन तथा परिवार व्यवस्था का प्रयोजन भटककर भूल गए हैं। क्या आज हम सब गृहस्थ जीवन में इस उद्देश्य का पालन करते हैं-

इषे रायो रमस्व सहसे द्युम्नऽऊर्जे अपत्याय।
सम्राडसि स्वराडसि सारस्वतौ त्वोत्सौ प्रावताम्॥

-यजुर्वेद १३.३५

विवाह के बाद पति-पत्नी प्रीतिपूर्वक रहें। विद्यावान बनें। श्रेष्ठ गुणों को धारण कर एकदूसरे की मंगल कामना करें। धर्मानुसार सुसंतति को जन्म दें। इस प्रकार वे सुखमय जीवन जीते रहें।

यदि अभी तक इस उद्देश्य को पूरा नहीं कर सके तो दांपत्य सौजन्य की रक्षा के लिए अब लोगों को कटिबद्ध होना ही चाहिए। पति के लिए यह उचित है कि वह पत्नी से प्रेम और सहयोग की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपेक्षा करे पर उसे भी पत्नी की तरह ही अपने व्यक्तित्व का पूर्ण समर्पण पत्नी को करना चाहिए। उसी प्रकार पत्नी को अपना अहं अपने पति में अनुभव करना चाहिए। तब ही वे सुख और पारलौकिक स्वर्ग का रसास्वादन कर सकेंगे।

धर्मपत्नी के प्रति पति के कर्त्तव्य

हमारे यहाँ नारी और पुरुष के कार्यों की एक सीमा रेखा सी मान ली गई है। घर का काम, रसोई बनाना, बच्चों की देखभाल, सफाई आदि के कार्य स्त्री के माने गए हैं। घर से बाहर कमाई करना, खेती, नौकरी या कोई पेशा आदि करना पुरुष का काम रहा और यह विभाजन इतना दृढ़ हो गया कि नारी सुलभ कार्यों को करने में पुरुष शरम-संकोच का अनुभव करने लगा है। घर की सीमा से बाहर के कार्यों में नारी का प्रयत्न निंदनीय समझा जाता है। यद्यपि आज के युग में ये सीमाएँ टूटती जा रही हैं तथापि पूर्व संस्कारों के कारण कम से कम हमारे देश में तो अभी तक उक्त धारणाएँ व्यापक रूप में फैली हुई हैं। आज भी नारी और पुरुष के कार्यक्षेत्र की यह विभाजन रेखा टूटी नहीं है।

भले ही इसका कारण कुछ भी रहा हो, लेकिन आज की परिस्थितियों में विकास की माँग के अनुसार इस विभाजन को लक्ष्मण रेखा नहीं माना जा सकता। आज हमें इसकी अनुपयुक्तता पर विचार करना होगा, साथ ही इसको मिटाना होगा।

वस्तुतः पति और पत्नी दो इकाई मिलकर एक सम्मिलित व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं और जीवनयात्रा का उत्तरदायित्व इस सामूहिक व्यक्तित्व पर ही निर्भर करता है। दोनों का एकदूसरे के काम में सहयोग आवश्यक है, अनिवार्य है। पति-पत्नी के कार्यों का विभाजन, उनकी सीमा रेखाएँ कभी निश्चित नहीं का जा सकतीं। दांपत्य जीवन का सार इसी में है कि दोनों आवश्यकता पड़ने पर वफादार साथी की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तरह एकदूसरे के कार्यों में मदद करें, योग दें, चाहे वह काम घर के अंदर का हो या बाहर का।

बहुधा भोजन बनाना पत्नी का काम समझा जाता है और यह ठीक भी है कि यदि पति बाहर काम पर गया है और पत्नी को अन्य काम नहीं है, वह घर पर रहकर भोजन बनाए। लेकिन आवश्यकता पड़ने पर पति को भी इस काम को उसी उत्साह से करना चाहिए जैसे पत्नी करती है। लेकिन बहुत से लोग इसे अपना अपमान समझते हैं। पत्नी के सामने चूल्हा फूँकने में शरम महसूस करते हैं। कैसी विडंबना है? जो स्त्री जीवन भर चूल्हा फूँकती है, पति को हमेशा भोजन बनाकर देती है। यदि बीमारी-हारी में या किसी परेशानी के समय वह इसमें असमर्थ होती है, तो वही पति इसमें अपना अपमान समझता है।

लेकिन समझदार पति, जो पत्नी को अपने बराबर साथी की तरह समझता है, वह कभी इसमें संकोच न करेगा। महान लेनिन के गृहस्थ जीवन का जिन्होंने अध्ययन किया है, वे जानते हैं कि वह पत्नी के हर काम में हाथ बँटाता था। पैदल ही चलकर एक साधारण नागरिक की तरह बाजार से घर का सामान, शाक-सब्जी लाता था। कई वर्षों तक तो भोजन एक समय उसकी पत्नी बनाती थी और एक समय वह स्वयं।

यह आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है कि पत्नी की तरह घर के कामों में पति को भी कुशल होना चाहिए। आपको स्मरण होगा कि राजा नल पाकविद्या में पारंगत थे और इसी गुण के कारण ऋतुपर्ण के सारथी के रूप में दमयंती ने उन्हें पहचान लिया था। गदाधारी भीम महाराज विराट के यहाँ रसोइए के रूप में नियुक्त हुए थे। स्वामी विवेकानंद अपने हाथों बड़ा स्वादिष्ट भोजन बना लेते थे। घर के कार्यों में महात्मा गांधी भी अपनी पत्नी को पूरा-पूरा सहयोग देते थे। भोजन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बनाने से लेकर घर की सफाई, टट्टी-पेशाब उठाने तक के काम बापू ने स्वयं किए थे। हमारे इतिहास में एक भी महापुरुष ऐसा नहीं मिलता, जिसने पत्नी के कार्यों को करने में संकोच अनुभव किया हो और सच भी है कि जीवन के व्यापक क्षेत्र में, जहाँ पति-पत्नी को मिलकर आगे बढ़ना होता है, वहाँ कार्य विभाजन की कोई सीमा-रेखा निर्धारित नहीं की जा सकती। जो ऐसा नहीं मानते वे अंधकार में पड़े और अज्ञानी हैं।

पत्नी जीवन भर अपने पति-बच्चों के वस्त्र धोती है। उनकी सेवा करती है, जो भी करना आवश्यक होता है, उसमें संकोच अनुभव नहीं करती। लेकिन आवश्यकता पड़ने पर पत्नी के कपड़े तक उठाकर धरने में, बीमारी-हारी में उसकी कुछ सेवा-शुश्रूषा करने में बहुत से पति नाक-भौं सिकोड़ते हैं। अपना अपमान समझते हैं। क्या इसी रूप में वे पत्नी की सेवा से उऋण होना चाहते हैं? सचमुच ऐसे व्यक्ति कभी भी नारी से उऋण नहीं हो सकते।

बहुत से परिवारों में स्त्रियाँ दिन-रात काम में लगी रहती हैं। उन्हें तनिक भी अवकाश नहीं मिलता कि कुछ विश्राम करें। दूसरी ओर पुरुष बहुत सा समय व्यर्थ आलस्य में पड़े रहकर मौज-मजे करने में ताश, शतरंज खेलने में बिताते हैं, लेकिन घर के काम में पत्नी को कुछ सहारा नहीं देते ताकि वह भी बेचारी कुछ सुस्ता सके, विश्राम कर सके।

बहुत से लोग अपनी स्त्री के प्रति सहानुभूति और सहयोग का रुख भी तो नहीं रखते। रात को साथियों की गप-शप, सिनेमा आदि के कारण देर से घर आते हैं। उधर बेचारी पत्नी भोजन बनाकर थकी-माँदी उनकी बाट जोहती है। न वह स्वयं समय पर खा पाती है न सो पाती है। पति इस तरह की व्यर्थ परेशानी से पत्नी को छुटकारा दिला

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकता है। इसके लिए आवश्यकता इस बात की है कि पत्नी के प्रति सद्भावना रहे। उसकी सुविधा का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाए। ऐसी बहुत सी कृत्रिम परेशानियों को दूर किया जा सकता है।

यदि आप अपने दांपत्य-जीवन को सुखी बनाना चाहते हैं, यदि आप अपनी पत्नी के स्वस्थ विकास की क्षमता रखते हैं, अपने कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व के प्रति सच्चे बनना चाहते हैं, तो सभी प्रकार के पत्नी के कार्यों में सहयोग करें। स्रष्टा ने नर-नारी के युग्म का सृजन किया। इसके पीछे उसका उद्देश्य एकदूसरे के प्रति आदर्शयुक्त पूर्ण समर्पण रहा है। नर-नारी परस्पर छोटे-बड़े का भेदभाव भूलकर, एकदूसरे में पूर्णत: मिलकर प्रीतिपूर्वक साहचर्य के साथ जीवन जिएँ। वे अपने उत्तरदायित्वों और कर्त्तव्यों के श्रेष्ठ गुणों को अपने जीवन में प्राथमिकता दें। प्रकृतिजन्य विकृतियों को दूर कर यौन शुचिता को समान रूप से सर्वोपरि महत्त्व दें, तो दांपत्य जीवन मंगलमय होगा।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारा सत्संकल्प

- ✧ हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।
- ✧ शरीर को भगवान का मंदिर समझकर आत्मसंयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।
- ✧ मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।
- ✧ इंद्रियसंयम, अर्थसंयम, समयसंयम और विचारसंयम का सतत अभ्यास करेंगे।
- ✧ अपने आप को समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।
- ✧ मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।
- ✧ समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।
- ✧ चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।
- ✧ अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।
- ✧ मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।
- ✧ दूसरों के साथ वह व्यवहार नहीं करेंगे, जो हमें अपने लिए पसंद नहीं।
- ✧ नर-नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।
- ✧ संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य-प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।
- ✧ परंपराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।
- ✧ सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।
- ✧ राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रांत, संप्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।
- ✧ मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है-इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनाएँगे, तो युग अवश्य बदलेगा।
- ✧ 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा' 'हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा' इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है। ❐❐

मुद्रक-युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ० प्र०)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org